RESEARCH PAPER | Education | Volume : 4 | Issue : 9 | September 2014 | ISSN - 2249-555X

क्षेत्रगत भिन्नता के संदर्भ में अध्यापक षिक्षा संस्थानों के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैलियों का अध्ययन

(Kshetragat Bhinnata Ke Sandarbh Me Adhyapak Shiksha Ke Pracharyon Ki Prabandh Shailiyo Ka Adhyayan)

KEYWORDS

Dr.Murlidhar Mishra
Associate Professor, Faculty of Education Banasthali Vidyapith, Dist-Tonk, Rajasthan-304022.

Ranjana Sharma
Research Scholar, Faculty of Education Banasthali Vidyapith, Dist-Tonk, Rajasthan-304022.

ABSTRACT क्षेत्रगत भिन्नता के संदर्भ में अध्यापक षिक्षा संस्थानों के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैलियों का अध्ययन करने के लिए ''वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि'' का उपयोग किया गया। सम्बन्धित शोध अध्ययन के उद्देष्य की प्राप्ति हेतु राजस्थान विष्वविद्यालय क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आने वाले कुल पांच जिलों (जयपुर, सीकर, झुन्झुनू, अलवर, दौसा) में स्थित तथा राजस्थान विष्वविद्यालय, जयपुर एवं जगद्गुरू रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विष्वविद्यालय, जयपुर से सम्बद्ध 180 बी.एड. एवं 36 षिक्षाशास्त्री महाविद्यालयों के 114 शहरी एवं 102 ग्रामीण प्राचार्यों को न्यादर्ष के रूप में स्तरीकृत यादृच्छिक गैर आनुपातिक सौदेष्य गुच्छ न्यादर्ष विधि के द्वारा चुना गया। प्रबन्धन शैली की जानकारी हेतु शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित 'प्राचार्य प्रबन्धषैली अनुसूची' एवं क्षेत्रगत विभिन्नता की जानकारी के लिए 'वैयक्तिक सूचना प्रपत्र' का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्षों में पाया गया कि क्षेत्रगत भिन्नता संदर्भ में अध्यापक षिक्षा संस्थानों के प्राचार्यों की उत्तरदायित्वपूर्ण बनाम उत्तरदायित्वमुक्त, व्यक्ति उन्मुख बनाम समूह उन्मुख, हस्तक्षेप प्रधान बनाम अहस्तक्षेप प्रधान, सहभागिता युक्त बनाम सहभागिता मुक्त, लक्ष्य उन्मुख बनाम प्रक्रिया उन्मुख एवं अन्तःक्रियात्मक बनाम गैर–अन्तःक्रियात्मक प्रबन्धन शैलियों के प्रति वरीयताएँ सार्थक रूप से भिन्न नहीं होती हैं, जबकि क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित प्रबन्धन शैली के प्रति प्रदर्षित वरीयताएँ सार्थक रूप से भिन्न होती हैं।

सामान्यतः किन्हीं दो प्रबन्धकों की कार्यषैली समान नहीं होती हैं। इसलिए यदि किसी प्रबन्धक या संस्था को सफल माना जाता है तो वह उसकी प्रबन्धन षैली की सफलता के कारण ही सम्भव होता है। किसी भी षैक्षिक संस्था की सफलता पर पड़ने वाले प्रभावों में संस्था प्रधान एक महत्वपूर्ण घटक होता है। संस्था प्रधान षिक्षण संस्थाओं में ऐसी परिस्थितियों को उत्पन्न करता है, जिससे षिक्षक एवं छात्र दोनों रचनात्मक एवं सृजनात्मक कार्य कर सकें। संस्थागत कार्यों की निश्पत्ति में आने वाली समस्याओं के समाधान के तरीके एवं प्रबन्धन कार्य की षैली को ही संस्था प्रधानों की प्रबन्धन षैली के रूप में जाना जाता है।

मेकगायर (2005) के अनुसार प्रबन्धन षैली एक प्रबन्धकीय भाशा षैली है जो प्रायः कैसा प्रबन्धन करता है? उसकी व्याख्या करने के लिए प्रयुक्त होती है। इसमें व्यक्तित्व के साथ–साथ व्यवहार को भी षामिल किया जाता है। खांडवाला (1995) के अनुसार प्रबन्धन षैली एक विषिश्ट तरीका है, जिससें एक प्रबन्धक संगठन, निर्णयन और लक्ष्य निर्धारण, व्यवस्थापन, रणनीतियों का क्रियान्वयन एवं अन्य आधारभूत प्रबन्धकीय क्रियाकलापों का निर्वहन करता है। हार्टजेल (2006) के अनुसार प्रबन्धन षैली का सरल आषय किसी संगठन को व्यवस्थित करने का एक तरीका है। यह प्रबन्धक का सामान्य दृश्टिकोण है, जिसके अंतर्गत वह संगठनात्मक उद्देष्यों की प्राप्ति के प्रयास हेतु कार्य स्थल पर व्यक्तियों एवं अधीनस्थों के साथ समझौता करता है। षोधकर्ता द्वय के अनुसार विभिन्न मानसिक, षारीरिक, सामा. जिक, वातावरणीय, व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं संवेदी तत्वों के प्रति अध्यापक षिक्षा संस्थानों के प्राचार्यों द्वारा प्रदत्त वरीयताओं का योग ही उनकी प्रबन्धन षैली को व्यक्त करता है। अध्यापक षिक्षा संस्थानों में कार्यरत प्राचार्यों की प्रबन्धन षैली से तात्पर्य विभिन्न मानसिक, षारीरिक, सामाजिक, वातावरणीय, व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं संवेदी तत्वों के प्रति अध्यापक षिक्षा संस्थानों के प्राचार्यों द्वारा प्रदत्त वरीयताओं का कुल योग से है।

लनेनबर्ग एवं ऑर्नस्टेइन (1991) ने प्रबन्धन षैलियों को तीन भागों–लोकतांत्रिक षैली, प्रजातांत्रिक षैली एवं अहस्तक्षेप षैली में विभक्त किया है। लिकर्ट (1967) ने अपनी पुस्तक 'द ह्यूमन ऑर्गेनाइजेषन' में प्रबन्धन षैली के चार दृश्टिकोणों का उल्लेख किया है– सहभागितावादी, पैतृात्मक, निरंकुष एवं मंत्रणात्मक प्रबन्धन षैली। विभिन्न षोधकर्ताओं के द्वारा भिन्न–भिन्न प्रबन्धन षैलियों को पहचाना एवं वर्गीकृत किया गया है। षोधकर्ता द्वय ने प्राचार्यों की प्रबन्धन षैली सात भागों– उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, व्यक्ति उन्मुख बनाम समूह उन्मुख, क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित, हस्तक्षेप प्रधान बनाम अहस्तक्षेप प्रधान, सहभागिता युक्त बनाम सहभागिता मुक्त, लक्ष्य उन्मुख बनाम प्रक्रिया उन्मुख तथा अन्तःक्रियात्मक बनाम गैर अन्तःक्रियात्मक प्रबन्धन षैली में वर्गीकृत किया।

इस संदर्भ में संस्था प्रधान/प्राचार्य/प्रधानाध्यापकों की प्रबन्धन षैली अथवा कार्यषैली सम्प्रत्यय को समझने के लिए समय–समय पर विभिन्न षोध अध्ययन हुए है। साहनी (2011) ने संस्था प्रधान की नेतृत्व षैली कोर्निल एवं अन्य (1999) ने द्वन्द्व प्रबन्धन षैली तथा गोस्वामी (2003) एवं मुमताज (2007) ने अध्यापक षिक्षा संस्थानों के सम्बन्ध में अध्ययन किया। क्षेत्रगत भिन्नता के संदर्भ में बहुगुणा (2002) ने पाया कि षहरी/युवा/प्रौढ़ महिला तथा पुरूश अध्यापकों ने अपने प्रधानाध्यापकों की निर्णयन षैलियों में निर्णय लेने सम्बधी तरीके में सर्तकता को प्राथमिकता दी। रवि (2003) ने षहरी अध्यापकों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रीय प्रधानाध्यापकों को अधिक उत्तरदायी पाया।

सम्बद्ध साहित्य के अध्ययन एवं अवलोकन के आधार पर षोधकर्ता द्वय ने यह अनुभव किया कि षहरी एवं ग्रामीण प्राचार्यों एवं अध्यापकों की नेतृत्व षैली, निर्णयन षैली उनके कार्य निश्पादन एवं प्रबन्धकीय कार्य व्यवहार को प्रभावित करती है। तब क्या क्षेत्रगत भिन्नता के आधार पर अध्यापक षिक्षा संस्थानों के प्राचार्यों की प्रबन्धन षैली वरीयताओं में भिन्नता होती है? इस प्रष्न से प्रेरित होकर षोधकर्ता द्वय ने क्षेत्रगत भिन्नता के संदर्भ में अध्यापक षिक्षा संस्थानों के प्राचार्यों की प्रबन्धन षैलियों का अध्ययन करने की आवष्यकता महसूस की।

षोध उद्देष्य

अध्यापक षिक्षा संस्थानों में कार्यरत प्राचार्यों की प्रबन्धन षैलियों का क्षेत्रगत भिन्नता के संदर्भ में अध्ययन करना।

षोध परिकल्पना

क्षेत्रगत भिन्नता के संदर्भ में अध्यापक षिक्षा संस्थाओं में कार्यरत प्राचार्यों द्वारा प्रदत्त प्रबन्धन षैली वरीयताओं में भिन्नता पायी जाती है।

षोध विधि

अध्यापक षिक्षा संस्थानों के प्राचार्यों की प्रबन्धन षैलियों का ग्रामीण एवं षहरी क्षेत्र के संदर्भ में अध्ययन करने हेतु 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया।

न्यादर्ष

प्रस्तुत षोध के न्यादर्ष चयन हेतु 'स्तरीकृत यादृच्छिक गैर आनुपातिक सौदेष्य गुच्छ न्यादर्ष विधि' को अपनाते हुए राजस्थान राज्य के राजस्थान विष्वविद्यालय क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आने वाले कुल पाँच जिलों (जयपुर, सीकर, झुन्झुनू, अलवर एवं दौसा) में स्थित तथा राज.वि.वि., जयपुर एवं जगद्गुरू रामानन्दाचार्य रा. जस्थान संस्कृत विष्वविद्यालय, जयपुर से सम्बद्ध 180 बी.एड. एवं 36 षिक्षाषास्त्री महाविद्यालयों के 114 षहरी एवं 102 ग्रामीण प्राचार्यों को न्यादर्ष के रूप में चुना गया।

षोध उपकरण

क्षेत्रगत भिन्नता सम्बन्धित सूचनाओं के संकलन हेतु स्वनिर्मित 'वैयक्तिक सूचना प्रपत्र' एवं प्राचार्यों की प्रबन्धन षैली की पहचान के लिए षोधकर्त्री द्वारा विकसित एवं मानकीकृत 'प्राचार्य प्रबन्धन षैली अनुसूची' का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों की प्रकृति

प्रस्तुत षोध अध्ययन में प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक रही है।

सांख्यिकी प्रविधियाँ

प्रस्तुत षोध में न्यादर्ष को क्षेत्रगत भिन्नता के संदर्भ में दो वर्गों – षहरी एवं ग्रामीण के रूप में वर्गीकृत किया गया। तत्पष्चात् अध्यापक षिक्षा संस्थानों के प्राचार्यों की प्रबन्धन षैलियों का अध्ययन करने के लिए 2×2 की आसंग सारणियाँ

Volume : 4 | Issue : 9 | September 2014 | ISSN - 2249-555X

निर्मित कर प्रत्येक प्रबन्धन पैली के प्रति प्रदर्षित वरीयताओं में 'काई वर्ग' मानों का परिकलन किया गया।

निश्कर्श एवं विवेचना

क्षेत्रगत भिन्नता के संदर्भ में अध्यापक षिक्षा संस्थानों में कार्यरत प्राचार्यों की सभी (सात) प्रबन्धन पैलियों पर दी गयी वरीयताओं एवं काई वर्ग के मानों को अग्रांकित सारणी–1 में दर्षाया गया है –

सारणी 1

अ.षि.सं. में कार्यरत प्राचार्यों की क्षेत्रगत भिन्नता के संदर्भभर्भ में प्रबन्धन पैलियाँ

क्र.सं.	प्रबन्धन पैली	क्षेत्र		मुक्तांष 1 व .05 के विष्वास स्तर पर काई वर्ग का सारणी मान
		षहरी	ग्रामीण	
1.	उत्तरदायित्व पूर्ण	102	96	1.520′
	उत्तरदायित्व मुक्त	12	06	
2.	व्यक्ति उन्मुख	50	41	0.296′
	समूह उन्मुख	64	61	
3.	क्षेत्र स्वतन्त्र	91	92	4.474′′
	क्षेत्र आधारित	23	10	
4.	हस्तक्षेप प्रधान	89	71	2.007′
	अहस्तक्षेप प्रधान	25	31	
5.	सहभागिता युक्त	76	69	0.023′
	सहभागिता मुक्त	38	33	
6.	लक्ष्य उन्मुख	12	16	1.270′
	प्रक्रिया उन्मुख	102	86	
7.	अन्तःक्रियात्मक	108	89	3.756′
	गैर अन्तःक्रियात्मक	06	13	

'सार्थक नहीं ''सार्थक

उपर्युक्त सारणी 1 में अध्यापक षिक्षा संस्थानों में कार्यरत प्राचार्यों की क्षेत्रगत भिन्नता के संदर्भ में विभिन्न प्रबन्धन पैलियों के प्रति दी गयी वरीयताओं एवं इन वरीयताओं के परिकलित काई वर्गमानों का प्रस्तुतीकरण किया गया है। इस सारणी के अध्ययन से ज्ञात होता है कि 'अध्यापक षिक्षा संस्थानों में कार्यरत प्राचार्यों की क्षेत्रगत भिन्नता के संदर्भ में क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित प्रबन्धन पैली को छोड़कर अन्य सभी प्रबन्धन पैलियों (उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, व्यक्ति उन्मुख बनाम समूह उन्मुख, हस्तक्षेप प्रधान बनाम अहस्तक्षेप प्रधान, सहभागिता युक्त बनाम सहभागिता मुक्त, लक्ष्य उन्मुख बनाम प्रक्रिया उन्मुख एवं अन्तःक्रियात्मक बनाम गैर अन्तःक्रियात्मक प्रबन्धन पैली) के परिकलित काई वर्गमान .05 के विष्वास स्तर पर मुक्तांष 1 के लिए सारणी मान से कम है। अतः षून्य परिकल्पना 'क्षेत्रगत भिन्नता के संदर्भ में अध्यापक षिक्षा संस्थानों में कार्यरत प्राचार्यों द्वारा प्रदत्त प्रबन्धन पैली वरीयताओं में भिन्नता नहीं पायी जाती है', उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्य मुक्त, व्यक्ति उन्मुख बनाम समूह उन्मुख, हस्तक्षेप प्रधान बनाम अहस्तक्षेप प्रधान, सहभागिता युक्त बनाम सहभागिता मुक्त, लक्ष्य उन्मुख बनाम समूह उन्मुख तथा अन्तःक्रियात्मक बनाम गैर अन्तःक्रियात्मक प्रबन्धन पैलियों के लिए स्वीकृत तथा क्षेत्र स्वतंत्र एवं क्षेत्र आधारित प्रबन्धन पैली' के लिए अस्वीकृत होती है। अतः षोध परिकल्पना 'क्षेत्रगत भिन्नता के संदर्भ में अध्यापक षिक्षा संस्थानों में कार्यरत प्राचार्यों द्वारा प्रदत्त प्रबन्धन पैली वरीयताओं में भिन्नता नहीं पायी जाती है', को उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, व्यक्ति उन्मुख बनाम समूह उन्मुख, हस्तक्षेप प्रधान बनाम अहस्तक्षेप प्रधान, लक्ष्य उन्मुख बनाम समूह उन्मुख, सहभागिता युक्त बनाम सहभागिता मुक्त तथा अन्तःक्रियात्मक बनाम गैर अन्तःक्रियात्मक के लिए स्वीकृत तथा क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित प्रबन्धन पैली के लिए अस्वीकृत किया जाता है। षोध परिकल्पना के परीक्षण से यह निश्कर्श निकलता है कि अध्यापक षिक्षा संस्थानों में कार्यरत षहरी एवं ग्रामीण प्राचार्यों की क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित प्रबन्धन पैली के प्रति प्रदर्षित वरीयताओं में सार्थक भिन्नता पायी जाती है। जबकि अध्यापक षिक्षा संस्थाना. ं में कार्यरत षहरी एवं ग्रामीण प्राचार्यों की उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, व्यक्ति उन्मुख बनाम समूह उन्मुख, हस्तक्षेप प्रधान बनाम अहस्तक्षेप प्रधान, सहभागिता युक्त बनाम सहभागिता मुक्त, लक्ष्य उन्मुख बनाम प्रक्रिया उन्मुख तथा अन्तःक्रियात्मक बनाम गैर अन्तःक्रियात्मक प्रबन्धन पैलियों के लिए प्रदर्षित वरीयताओं में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जाती है। इस निश्कर्श से प्रत्यक्षतः सम्बद्ध होने वाला कोई षोध अध्ययन षोधकर्त्री को प्राप्त नहीं हुआ है। इसलिए षोधकर्ता द्वय न्यादर्ष के बड़े आकार या भिन्न प्रविधि प्रयोग द्वारा निश्कर्श की जाँच हेतु सुझाव प्रस्तुत करते हैं।

षैक्षिक निहितार्थ

सम्बद्ध साहित्य का अध्ययन यह उद्घाटित करता है कि अध्यापक षिक्षा संस्थानों के प्राचार्यों की प्रबन्धन पैलियों का क्षेत्र अपेक्षाकृत नया अध्ययन क्षेत्र है। प्रस्तुत अध्ययन में षोधकर्ता द्वय ने अध्यापक षिक्षा संस्थानों के प्राचार्यों की प्रबन्धन पैली वरीयताओं को समझने का एक यथासम्भव सुनियोजित व क्रमबद्ध प्रयास किया है। प्रबन्धन थ्यौली के सम्बन्धी सूचनाएँ अध्यापक षिक्षा संस्थानों में प्रबन्धकों एवं नियोजकों, प्राचार्य, अध्यापक षिक्षकों के कार्य व्यवहार में रूचि रखने वालों के लिए उपयोगी हो सकती हैं और भावी अध्येताओं के अध्ययन एवं चिंतन का आधार बन सकती हैं। वस्तुतः पैलीगत एवं क्षेत्रगत विषिश्टताओं से सम्बन्धित साहित्य इस तथ्य को स्पश्ट करता है कि किसी भी व्यक्ति की पैलियों में यकायक आमूलचूल प.ि रवर्तन करना सम्भव नहीं है। लेकिन संस्था विषेश के हित साधन एवं षैक्षिक जगत की वाँछाओं को ध्यान में रखते हुए सतत् प्रयास एवं अभ्यास से पैलीगत वरीयताओं में सुधार लाया जा सकता है तथा तात्कालिक प्रबन्धन पैली वरीयताओं की जानक. ारी का उपयोग षैक्षिक प्रबन्धक एवं नियोजक, प्राचार्य, अध्यापक षिक्षक षोधार्थी तथा न्यूपा, एन.सी.ई.आर.टी. एवं एन.सी.टी.ई. जैसे विभिन्न षैक्षिक अभिकरण/ निकाय अध्यापक षिक्षा संस्थानों के प्राचार्यों के प्रबन्धकीय कार्य व्यवहार एवं प्रषिक्षण कार्यक्रम में सुधार हेतु कर सकते हैं।

REFERENCE बहुगुणा, सुशीलचन्द्र (2002), एन एनालिटिकल स्टेडी ऑफ दा डिसीजन मेकिंग स्टाइल्स, प्रिफरेंस ऑफ दा प्रिंसीपल्स ऑफ हायर सैकेण्डरी स्कूल एज परसीव्ड बाय दा टीचर्स, पीएच–डी., एडयूकेशन, एच.एन.डी. गढ़वाल यूनिवर्सिटी, श्रीनगर. द्य गोस्वामी, वंदना (2003), सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा शिक्षार्थी अध्यापकों का सम्प्रत्ययात्मक विकास एवं स्व–विकास पर प्रभाव, पीएच–डी., षिक्षा, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली. द्य हार्टजेल, डी. (2006), डिक्षनरी ऑफ मैनेजमेंट, एकेडेमिक पब्लिषर्स, न्यू देहली. द्य खांडवाला, पी. (1995), इफेक्टिवनेस मैनेजमेंट स्टाइल्स : एन इंडियन स्टडी, जनरल ऑफ यूरा–एषियन मैनेजमेंट, 1(1), 39–64. द्य कोर्निल, पॉमस ए. एट ऑल (1999), टीचर्स कॉनफ्लिक्ट मैनेजमेंट स्टाइल्स विद् पियर्स एवं स्टूडेन्टस पेरेन्टस, इन्टरनेषनल जनरल ऑफ कॉनफ्लिक्ट मैनेजमेंट, 10(1), 69–79. द्य लिकर्ट, आर. (1967), द ह्यूमन ऑर्गेनाइजेषन, मेकग्रा–हिल, न्यूयार्क. द्य ललेनबर्ग, एफ. सी. एण्ड ऑर्नस्टेइन, ए.सी. (1991), एजुकेषनल एडमिनिस्ट्रेषन कॉन्सेप्ट्स एण्ड प्रेक्टिस, वडवर्थ, बेल्मोंट सी.ए. द्य मेकगायर, आर. (2005), क्वीच मैनेजमेंट स्टाइल्स टू यूज लंदन : दा फार्मास्यूटीकल जनरल, 275(9), 317–324. द्य मुमताज, एन. एस. (2007), प्रोफेशनलिज्म एमंग टीचर एडूकेटर्स, एडूट्रेक्स, नीलकमल पब्लिकेशन, हैदराबाद, VII. | रवि, वी. (2003), अ स्टडी ऑफ दा फेक्टर्स कन्ट्रीब्यूट टू दा एफीसिएन्सी ऑफ दा हेड ऑफ दा इन्सटीट्यूड इन प्राइवेट स्कूल इन रिलेषन टू देअर एफीसिएन्सी एज एडमिनिस्ट्रेटर्स एण्ड एज ए टीचर्स, पीएच–डी., भारायेर यूनिवर्सिटी, कोयम्बतूर. द्य साहनी, मधु (2011), इम्पेक्ट ऑफ लीडरशिप स्टाइल्स ऑफ प्रिंसीपल्स ऑन ऑर्गेनाइजेशनल क्लाइमेट ऑफ स्कूल्स, पीएच–डी. एड्यूकेशन, जनरल ऑफ कम्यूनिटी गाइडेंस एण्ड रिसर्च, XXVIII ¼2½, 179–185. द्य